2 जनवरी 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2011(वीर नि. संवत् -2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय (अलीगढ-उ.प्र.) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द एज्युकेशनल सोसायटी एवं श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ द्वारा विश्व के प्रथम दिगम्बर जैन विश्वविद्यालय मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन गुरुवार, दिनाँक 16 दिसम्बर से गुरुवार 23 दिसम्बर, 2010 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर भव्य जिनालय में चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर की 51 इंची श्वेत, चतुर्मुखी, पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पञ्चकल्याणक पर प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचंदजी जैन अलीगढ, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. किरीटभाई गोसालिया अमेरिका इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री मङ्गलायतन, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित मुकेशजी शास्त्री तन्मय विदिशा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, ब्र. अमितजी जैन विदिशा, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित दीपकजी जैन भोपाल, श्री श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र.नन्हेभाई, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इंदौर आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

प्रतिष्ठाविधि का निर्देशन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मङ्गलायतन द्वारा किया गया।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के तीसरे दिन तीर्थङ्कर के गर्भ कल्याणक के अवसर पर देवों द्वारा पुष्पवृष्टि प्रतीकस्वरूप हेलिकॉप्टर द्वारा आकाश से की जाने वाली रत्नवृष्टि का दृश्य और तीर्थङ्कर की माता को दिखलाये जाने वाले सोलह स्वप्न तथा तीसरे काल में भोगभूमि व्यवस्था का प्रथम बार लेजर लाईट शो द्वारा किया गया प्रदर्शन सभी उपस्थित दर्शकों द्वारा सराहा गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती बीना जैन-श्री राजेन्द्रजी जैन, देहरादून को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री आनंद - रुचिका जैन शिकागो थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री कमल-श्रीमती शशि बड़जात्या मुम्बई थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री अजितजी जैन-श्रीमती अनीता जैन बड़ौदरा थे। दिनाँक 17 दिसम्बर को इन्द्रप्रतिष्ठा विधि - यागमण्डल विधान का उद्घाटन डॉ. विनयकान्त-श्रीमती ज्योत्सनाबेन शाह, अमेरिका द्वारा किया गया।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री भभूतमल चम्पालालजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन डॉ. किरीटभाई गोसालिया परिवार, फीनिक्स (यू.एस.ए.) ने किया।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर मंचासीन विद्वानों का सम्मान करते हुये श्री पवनजी जैन (चेयरमैन-मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ गवरनर्स) ने कहा कि यहाँ पधारे हुये सभी विद्वान जिनशासन के सजग प्रहरी हैं। तीर्थङ्करों, वीतरागी संतों की परम्परा से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को प्राप्त दिव्यदेशना की परम्परा का निर्वहन करनेवाले सभी विद्वानों का सम्मान करके हम अपने को ही गौरवान्वित कर रहे हैं; क्योंकि विद्वानों का सम्मान किसी व्यक्ति विशेष का सम्मान नहीं; अपितु मां जिनवाणी का सम्मान है।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । महोत्सव में लगभग 15-20 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

सम्पादकीय – 49

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ७७

विगत गाथा में पुद्गल का स्वरूप कहा एवं उसके छः प्रकार बताये।

अब प्रस्तुत गाथा में परमाणु का स्वरूप कहते हैं।

मूलगाथा इसप्रकार है –

सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागी मुत्तिभवो।।७७।।

(हरिगीत)

स्कन्ध का वह निर्विभागी अंश परमाणु कहा।
वह एक शाश्वत मूर्तिभव अर अविभागी अशब्द है।। ७७।।

सर्व स्कन्धों का जो अन्तिम भाग है, सबसे छोटा अविभागी अंश है, उसे परमाणु कहते हैं। वह अविभागी, एक, शाश्वत तथा मूर्तरूप से उत्पन्न होनेवाला है और अशब्द है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यह परमाणु की व्याख्या है – पूर्वोक्त स्कन्धरूप पर्याय का जो अन्तिम भेद छोटे से छोटा अंश है, वह परमाणु है। वह एकप्रदेशी है, उसका कोई विभाग नहीं होता; अतः वह एक है, नित्य है, अविनाशी है, अनादि-अनंत है तथा रूप, रस, गंध व स्पर्श से उत्पाद होने से मूर्त है, अशब्द है; क्योंकि शब्द परमाणु का गुण नहीं है।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में जो कहा – वह इसप्रकार है –

(दोहा)

सकल खंद का अन्त जो, तिसहि कहत परमानु।
नित्य सबद बिन एक है, मूरत भागलु कान।।३४२।।

(सवैया इकतीसा)

खंद रूप परजै का अंतभेद परमानु,
सौई है विभाग बिना तातैं अविभागी है।
निर्विभाग एक परदेस तातैं एक लसै,
दर्वरूप नासै नाहिं सासुतां विभागी है।।
रूप आदि मूरति तैं मूरतीक नाम पावै,
भाषा पर्याय तातैं भाषा रूप त्यागी है।
सुद्ध गुण परजय सौं, सदा सुद्ध परमानु,
सोई तौ प्रतीति आनै जाकै जोति जागी है।।३४३।।

(दोहा)

अविभागी परमानु यहु पुग्गल दरब जथार्थ।
खंधरूप नाना लसै सो विभाव परमार्थ।।३४४।।

उक्त काव्यों में कवि कहते हैं कि स्कन्ध का अविभागी अंश परमाणु है। वह परमाणु नित्य है, शब्द रहित है तथा एक है, शाश्वत है। शुद्ध गुणपर्यायवान है। वह विभावभाव से नाना प्रकार के स्कन्धों में रहता है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ये जो स्थूल स्कन्ध दिखाई देते हैं, ये कार्य हैं, इसलिए इनका कारण होना चाहिए। परमाणुओं में अनेकपना कायम नहीं रहता; क्योंकि एकत्र छूटे परमाणु एकत्र होने पर स्कंध बन जाते हैं तथा छूटे रहने पर एक-एक परमाणु पृथक्-पृथक् रहता है।

गुरुदेव भावुक होकर कहते हैं देखो ! यह सर्वज्ञ का विज्ञान है ! स्कन्ध में से छूटते ही जो परमाणु रह जाता है, वह स्वयं की तत्समय की योग्यता से ही रहता है। जीव के कारण पुद्गल में फेरफार नहीं होता।

परमाणु के खण्ड नहीं होते। स्कंध का अंतिम भेद परमाणु है। वह सूक्ष्म-सूक्ष्म अर्थात् अतिसूक्ष्म होता है। वह परमाणु त्रिकाल अविनाशी है। एक परमाणु में शब्दरूप होने की योग्यता नहीं है। जब एक परमाणु दूसरे अनंत परमाणुओं के साथ मिले तो शब्दरूप होने की योग्यता आती है। परमाणु में स्पर्श, रस, गंध, वर्ण हैं; परन्तु उसमें शब्दरूप परिणमन की योग्यता नहीं है।''

इसप्रकार इस गाथा, टीका एवं हिन्दी गद्य-पद्य में यह कहा है कि जो ये सूक्ष्म-स्थूल सब पुद्गल स्कन्ध दिखाई देते हैं, वे कार्य हैं। जो कार्य होता है, उसका कारण अवश्य होता है। कारण के बिना कार्य नहीं होता।

देखो, स्कन्ध में से छूटकर जो पुद्गल परमाणु रूप रहता है वह स्वयं अपने कारण रहता है, जीव या पुद्गलादि के कारण नहीं रहता।

यद्यपि परमाणु एक प्रदेशी है, तथापि उसमें स्वयं में स्कन्धरूप होने की योग्यता है।

इसी कारण परमाणु को पुद्गलास्तिकाय कहा जाता है। वह परमाणु निरंश है; क्योंकि उस परमाणु के दो भाग नहीं हो सकते। ●

गाथा– ७८

विगत गाथा में परमाणु का स्वरूप कहा गया है। वहाँ कहा है कि सर्व स्कन्धों का अन्तिम भाग परमाणु है।

अब प्रस्तुत गाथा में भी परमाणु का ही विशेष स्वरूप कहते हैं।

मूलगाथा इसप्रकार है –

आदेसमेत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु।
सो णेओ परमाणु परिणामगुणो सयमसद्दो।।७८।।

(हरिगीत)

कथनमात्र से मूर्त है, अर धातु चार का हेतु है।
परिणामी तथा अशब्द जो परमाणु है उसको कहा।।७८।।

जो आदेश मात्र से अर्थात् कथन मात्र से मूर्त हैं तथा जो पृथ्वी आदि चार धातुओं का कारण है, वह परमाणु है, जो कि परिणाम गुणवाला है और स्वयं अशब्द है।

टीका करते हुए आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि परमाणु भिन्न-भिन्न जाति के नहीं होते। मूर्तत्व के कारणभूत जो स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण हैं, उनका परमाणु से कथनमात्र ही भेद किया जाता है। वस्तुतः तो परमाणु एक प्रदेशी अर्थात् अप्रदेशी होता है तथा समस्त परमाणु समान गुणवाले होते हैं। किसी भी परमाणु में यदि एक भी गुण कम हो तो उस गुण के साथ अभिन्न प्रदेशी परमाणु ही नष्ट हो जायेगा; इसलिए समस्त परमाणु समान गुणवाले ही होते हैं। वे भिन्न-भिन्न जाति के नहीं हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी कहते हैं -

(दोहा)

कथन मात्र ही मूर्ति है, भूमि आदि का हेतु।
परमानू परिनाम गुण, निज असवद गुन हेतु ।।३४५।।

(सवैया इकतीसा)

रूपादि गुन कौ और परमानू दरव कौ,
नाम मात्र भेदलसै देस भेद नाहीं है।
मही-तोय-तेज-वायु च्यारौं का कारनरूप,
परमाणू नाम तामैं चित्र परछाँहीं है ।।
जैसें तामैं गंध आदि विकत-अविकत है,
तैसें कै सब्दरूप नैक न दिखाहीं है।
एक परदेस अनू सबद है खंद जन्य,
ऐसैं परमाणु भेद जिनवाणी माहीं है।।३४६।।

उपर्युक्त छन्दों में यह कहा गया है कि रूपादि गुण और परमाणु द्रव्य में नाममात्र का भेद है, कथनमात्र भेद है, प्रदेश भेद नहीं है। पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु चारों का एक नाम परमाणु है, चारों परमाणु रूप हैं। जैसे उन परमाणुओं में गंध आदि व्यक्त एवं अव्यक्त हैं, वैसे वे परमाणु शब्दरूप से दिखाई नहीं देते। अणु एक प्रदेशी हैं तथा शब्द स्कन्धजन्य हैं। जिनवाणी में ऐसा परमाणु भेद कहा है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इसके भावार्थ में कहते हैं कि ''परमाणु द्रव्य शक्तिवान है तथा उसमें स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण - चार गुण हैं।

शक्तिवान द्रव्य गुण के बिना नहीं होता। उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण की शक्ति है, परमाणु निर्विभाग है। वह स्कन्ध का अन्तिम अंश है। वह आदि-मध्य-अन्त में एक ही है। इसकारण परमाणु के दो भाग नहीं होते। पृथ्वी, अग्नि, वायु आदि जुदे-जुदे पुद्गल के परमाणु नहीं हैं; किन्तु परमाणु ही जुदी-जुदी अवस्था धारण करते हैं। कोई पृथ्वी रूप परिणमते हैं, कोई पानी रूप परिणमते हैं।''[१]

इसप्रकार इस गाथा में परमाणु के स्वरूप में यह कहा है कि परमाणु भिन्न जाति के नहीं होते। मूर्तत्व के कारणभूत जो स्पर्शादि हैं, उनका परमाणु से कथन मात्र ही भेद किया जाता है। वस्तुतः तो परमाणु एकप्रदेशी ही होता है तथा समस्त परमाणु समान गुण वाले ही होते हैं। ●

१. श्री सद्गुरु प्रवचन प्रसाद, पृष्ठ-१३३३-३४, गाथा-७८, दि. ८-४-५२

डॉ. चन्दुभाई कामदार का सम्मान

राजकोट (गुज.) : यहाँ दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनाँक 11 दिसम्बर को 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर डॉ. चन्दुभाई कामदार का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर विशाल जनसमुदाय एवं मुमुक्षु समाज की उपस्थिति में समाज के अध्यक्ष श्री सुमनभाई दोशी ने दि.जैन मुमुक्षु समाज के ओर से ऊँकाररूप चांदी का सम्मान चिह्न भेंट किया। इसके पश्चात समग्र ट्रस्टी मण्डल ने ग्रन्थाधिराज समयसार भेंट किया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने शॉल ओढाकर डॉ. चन्दुभाई का सम्मान किया। मंदिर के पूजन व्यवस्थापक श्री भूराभाई दरबार ने ज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ भेंटकर सम्मान किया।

समारोह में श्री सुमनभाई एवं चन्दुभाई के बड़े जंवाई श्री निरंजनभाई ने डॉ. चन्दुभाई द्वारा 72 वर्ष से चल रही अविरल तत्त्वयात्रा पर प्रकाश डाला और उनके द्वारा गुरुदेवश्री की सभाओं में किये जाने वाले तात्त्विक प्रश्नोत्तरों, चर्चा-प्रसंगों, जिनवाणी श्रवण-चिन्तन-मनन की अपूर्व भावना व निरन्तर आत्मकल्याण में लगे रहने रूप भावना का स्मरण किया। इस शतायु में भी डॉ. चन्दुभाई नियमित रूप से गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचनों का लाभ लेते हैं।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन दि.जैन मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री किशोरभाई लाखाणी ने किया।

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

बीजापुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ महाराज दिगम्बर जैन मंदिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 14 से 21 नवम्बर तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मोहरे द्वारा दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा ली गयी। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार द्वारा सम्यग्दर्शन पर प्रवचन हुये।

विधान की उपलब्धियों के अन्तर्गत प्रत्येक पूर्णिमा एवं अमावस्या को पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मोहरे द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार द्वारा प्रत्येक बुधवार को प्रौढकक्षा व प्रत्येक रविवार को बालकक्षा चलाने की स्वीकृति दी गई।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती प्रगति चंकेश्वरा बीजापुर थे। आयोजन में श्री 1008 भगवान आदिनाथ दि.जैन मंदिर ट्रस्ट का भी पूर्णरूप से सहयोग रहा।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मोहरे एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार ने संपन्न कराये ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 से 20 जनवरी, 2011	उदयपुर	पंचकल्याणक
28 जनवरी से 4 फरवरी	भिण्ड	पंचकल्याणक

खतौली में डॉ. भारिल्ल का व्याख्यान

खतौली (म.प्र.) : यहाँ जैन मिलन व अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री चन्द्रप्रभ दि.जैन मंदिर पीसनोपाड़ा में जैन मिलन शाखा खतौली द्वारा दिनाँक 14 से 16 दिसम्बर तक रत्नत्रय महामण्डल विधान एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार की 16वीं गाथा व 15वें कलश पर विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला।

रत्नत्रय विधान के मंगल अवसर पर दिनाँक 15 दिसम्बर को आयोजित डॉ. भारिल्ल के अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्रजी जैन (भूतपूर्व चेयरमैन- नगरपालिका मुजफ्फरनगर) ने की। कार्यक्रम में जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशचंदजी जैन ऋतुराज, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित नेमचंदजी शास्त्री खतौली एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल को शॉल व प्रशस्ति-पत्र देकर समस्त जैन समाज ने अपने को गौरवान्वित अनुभव किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन श्री कल्पेन्द्रजी जैन ने किया। रात्रि में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा भी अलग से शॉल व प्रशस्ति-पत्र देकर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया गया।

समारोह के अन्तर्गत जैन मिलन के राष्ट्रीय मंत्री वीर जयचंदजी जैन ने डॉ. भारिल्ल के साहित्य की प्रशंसा करते हुये कहा कि डा. भारिल्ल का साहित्य सरल सुबोध व आगम के अनुकूल है। डॉ. भारिल्ल ने विशेष अनुरोध पर अपने व्याख्यान में **णमोकार महामंत्र** का विस्तृत विवेचन किया। इसी क्रम में डॉ. भारिल्ल की नवीनकृति नियमसार अनुशीलन भाग-2 का विमोचन श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन (खतौली वालों) दिल्ली ने किया।

कार्यकारिणी घोषित

उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन उदयपुर जिले की कार्यकारिणी में निम्न पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.महावीरप्रसादजी जैन (प्रदेश उपाध्यक्ष) ने की। मुख्य अतिथि श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष) थे।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष श्री कमलजी भोरावत, महामंत्री श्री अशोकजी गदिया, उपाध्यक्ष श्री सुरेशजी भोरावत, श्री अभयजी बण्डी व श्री हितेशजी गांधी, सहमंत्री श्री नितिनजी गंगावत, सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती आशा पाण्ड्या, श्रीमती सीमा जैन व श्रीमती नीलम जैन, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी पोरवाल, संगठन मंत्री श्री रमेशजी वालावत व श्रीमती राजकुमारी अखावत, प्रचार मंत्री श्री कमलेशजी नावडिया, श्री ललितजी गदिया व श्री उज्वलजी पंचोली निर्विरोध निर्वाचित हुये।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित खेमचंदजी जैन (जिला प्रभारी) ने किया।

– नृपेन्द्र जैन

संगोष्ठी संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ दिनाँक 28 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समाधि दिवस के पावन प्रसंग पर अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं श्री महावीर विद्या निकेतन के संयुक्त तत्त्वावधान में **पूज्य गुरुदेवश्री का समग्र जीवन एक तत्त्वप्रचार** विषय पर एक संगोष्ठी का विशेष आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर ने गुरुदेवश्री के विविध संस्मरणों के माध्यम से प्रेरणा दी। साथ ही श्री आदिनाथजी नाखाते, श्री संदीपजी जैनी एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री परमागम मंदिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 14 से 21 नवम्बर तक लघु सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित लालजीभाई विदिशा, श्री बसंतजी बड़जात्या ग्वालियर, पण्डित रमेशचंदजी करहल आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

विधान में मंगल कलश श्री पी.सी.जैन पत्रकार दिल्ली द्वारा विराजमान किया गया। विधान में सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

– निर्मलकुमार जैन एड.

नवीन प्रकाशन

गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं लब्धिसार-क्षपणासार पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत टीका सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का हिन्दी अनुवाद डॉ.उज्ज्वला शहा ने किया है। गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं लब्धिसार-क्षपणासार के कुल पृष्ठ क्रमश: 1050 व 688 हैं। दोनों ग्रन्थों का मूल्य 175 -125/- रुपये (डाकखर्च सहित) है। शास्त्र प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर संपर्क करें -

पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई - 400022, फोन-(022) 24073581

हार्दिक बधाई !

१. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका (बांसवाड़ा) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित शिक्षकों की सृजनात्मक प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत जिला स्तरीय पत्रवाचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

२. श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा के सुपुत्र चि. श्रेणिक मुम्बई एवं श्री अशोककुमारजी दोशी की सुपुत्री सौ. का. आकांक्षा जैन का विवाह दिनाँक 22 नवम्बर को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

एतदर्थ टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

बालचंद इन्स्टीट्यूट का विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

67 अठारहवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

व्यवहाराभासियों की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी आगे लिखते हैं –

''तथा उन अरहंतों को स्वर्ग-मोक्षदाता, दीनदयाल, अधम उधारक, पतितपावन मानता है; सो जैसे अन्यमती कर्तृत्वबुद्धि से ईश्वर को मानता है; उसीप्रकार यह अरहंतदेव को मानता है। ऐसा नहीं जानता कि फल तो अपने परिणामों का लगता है, अरहंत तो उनको निमित्तमात्र हैं, इसलिए उपचार द्वारा ये विशेषण सम्भव होते हैं।

अपने परिणाम शुद्ध हुए बिना अरहंत ही स्वर्ग-मोक्षादि के दाता नहीं हैं। तथा अरहंतादिक के नामादिक से श्वानादिक ने स्वर्ग प्राप्त किया, वहाँ नामादिक का ही अतिशय मानते हैं; परन्तु बिना परिणाम के नाम लेनेवाले को भी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती, तब सुननेवाले को कैसे होगी ? श्वानादिक को नाम सुनने के निमित्त से कोई मंदकषायरूप भाव हुए हैं, उनका फल स्वर्ग हुआ है; उपचार से नाम ही की मुख्यता की है।

तथा अरहंतादिक के नाम-पूजनादि से अनिष्ट सामग्री का नाश तथा इष्ट सामग्री की प्राप्ति मानकर रोगादि मिटाने के अर्थ व धनादिक की प्राप्ति के अर्थ नाम लेता है व पूजनादि करता है। सो इष्ट-अनिष्ट का कारण तो पूर्वकर्म का उदय है, अरहंत तो कर्त्ता हैं नहीं।

अरहंतादिक की भक्तिरूप शुभोपयोग परिणामों से पूर्व पाप के संक्रमणादि हो जाते हैं; इसलिए उपचार से अनिष्ट के नाश का व इष्ट की प्राप्ति का कारण अरहंतादिक की भक्ति कही जाती है; परन्तु जो जीव प्रथम से ही सांसारिक प्रयोजनसहित भक्ति करता है, उसके तो पाप ही का अभिप्राय हुआ। कांक्षा, विचिकित्सारूप भाव हुए – उनसे पूर्व पाप के संक्रमणादि कैसे होंगे ? इसलिए उसका कार्य सिद्ध नहीं हुआ।[१]''

पण्डित टोडरमलजी के उक्त कथन में यह बात स्पष्टरूप से कही गई है कि जिसप्रकार ईश्वरवादी ईश्वर को जगत का कर्ता-धर्ता, स्वर्ग-मोक्षदाता, अधमों का उद्धार करनेवाला, पतितों को पवित्र करनेवाला मानता है; उसीप्रकार यह व्यवहाराभासी जैन अरहंत भगवान को जगत का कर्ता-धर्ता, स्वर्ग-मोक्षदाता, अधमों का उद्धार करनेवाला, पतितों को पवित्र करनेवाला मानता है। मात्र नाम का ही अन्तर है, मान्यता में कोई अन्तर नहीं है।

अपनी बात को पुष्ट करने के लिए वह प्रमाण भी प्रस्तुत करता है; पर पण्डितजी का कहना यह है कि फल तो अपने परिणामों का ही लगता है, **अरहंत तो मात्र निमित्त हैं। उन्हें कर्ता कहना मात्र उपचरित कथन है।**

अपने मिथ्या अभिप्राय का पोषण करता हुआ वह कहता है कि भक्ति से प्रसन्न होकर अरहंत भगवान तो कुछ नहीं करते; परन्तु पापों का संक्रमण हो जाता है और भक्तों का काम हो जाता है।

वस्तुत: बात तो यह है कि भोगों की कामना से भक्ति करनेवालों को तो पुण्यबंध भी नहीं होता, पापबंध होता है; क्योंकि उनका अभिप्राय तो अपने पाप भावों के पोषण का होता है। पाप का उदय आने पर तो काम बनते नहीं, बिगड़ते हैं। अत: यह आश्वासन देना कि तेरी भक्ति से कर्मों का संक्रमण होकर तेरा काम बन जायेगा, एक प्रकार से मिथ्या मान्यता का पोषण करना ही है।

अनेक लोग ऐसे भी हैं; जो भगवान की भक्ति को मुक्ति का कारण मानते हैं। उन लोगों को लक्ष्य में रखकर पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा कितने ही जीव भक्ति को मुक्ति का कारण जानकर वहाँ अति अनुरागी होकर प्रवर्तते हैं। वह तो अन्यमती जैसे भक्ति से मुक्ति मानते हैं, वैसा ही इनके भी श्रद्धान हुआ। परन्तु भक्ति तो रागरूप है और राग से बंध है, इसलिए मोक्ष का कारण नहीं है।[१]''

अन्यमतियों के समान ही कुछ जैन लोग भी भक्ति को मुक्ति का कारण मान लेते हैं; परन्तु जैन मान्यतानुसार तो भक्ति शुभभावरूप होने से पुण्यबंध का कारण है। अरे, भाई! **जो भाव बंध का कारण हो, वही भाव मोक्ष का कारण कैसे हो सकता है ?**

इस पर यदि कोई कहे कि यदि ऐसा है तो फिर हम भक्ति करें ही क्यों?

इस प्रश्न के उत्तर में पण्डितजी कहते हैं –

''जब राग का उदय आता है, तब भक्ति न करे तो पापानुराग हो, इसलिए अशुभराग छोड़ने के लिए ज्ञानी भक्ति में प्रवर्तते हैं और मोक्षमार्ग को बाह्य निमित्तमात्र भी जानते हैं; परन्तु यहाँ ही उपादेयपना मानकर संतुष्ट नहीं होते, शुद्धोपयोग के उद्यमी रहते हैं।

वही पंचास्तिकाय व्याख्या में कहा है –

इयं भक्ति: केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। तीव्ररागज्वर-विनोदार्थमस्थानरागनिषेधार्थं क्वचित् ज्ञानिनोऽपि भवति।[२]

यह भक्ति केवल भक्ति ही है प्रधान जिसके ऐसे अज्ञानी जीव के होती है। तथा तीव्र रागज्वर मिटाने के अर्थ या कुस्थान के राग का निषेध करने के अर्थ कदाचित् (कभी-कभी) ज्ञानी के भी होती है।[३]''

---

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२२

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२२

२. अयं हि स्थूललक्ष्यतया केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। उपरितनभूमिकायामलब्धा स्पदस्यास्थानरागनिषेधार्थं तीव्ररागज्वरविनोदार्थं वा कदाचिज्ज्ञानिनोऽपि भवतीति। – (गाथा १३६ की टीका)

३. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२२

पंचास्तिकाय की समयव्याख्या नामक टीका का उक्त उद्धरण टिप्पणी में मूलत: दिया गया है। उसका हुबहू अनुवाद इसप्रकार है –

''वस्तुत: यह भक्ति संबंधी प्रशस्तराग, मात्र भक्ति है प्रधान जिसे, ऐसे स्थूल लक्ष्यवाले अज्ञानी को होता है; उच्चभूमिका में स्थिति प्राप्त न की हो तब, अस्थान का राग रोकने के लिए अथवा तीव्र राग ज्वर मिटाने के लिए कदाचित् ज्ञानी को भी होता है।''

देखो, कितने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि ज्ञानीजन मुक्ति प्राप्त करने के लिए भगवान की भक्ति नहीं करते; क्योंकि वे बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि **व्यवहारभक्ति शुभरागरूप होने से पुण्यबंध का कारण तो है; परन्तु मुक्ति का कारण नहीं है।**

यद्यपि यह परमसत्य है कि ज्ञानीजन मुक्ति के लिए तो भक्ति नहीं करते; तथापि उन्हें भगवान की भक्ति करते हुए देखा तो जाता है।

हाँ, देखा जाता है; क्योंकि तीव्ररागरूपी ज्वर से बचने के लिए और भोगों के लक्ष्य से होनेवाले राग से बचने के लिए वे कदाचित् (कभी-कभी) भक्ति में भी प्रवर्तते हैं।

देखो, यहाँ **कदाचित्** शब्द का प्रयोग है। तात्पर्य यह है कि वे भक्ति आदि कार्यों में सदा नहीं, कदाचित् (कभी-कभी) ही प्रवृत्ति करते हैं।

यह कथन मात्र पण्डित टोडरमलजी का ही नहीं है, अपितु आचार्य अमृतचन्द्र का है; क्योंकि यह कथन पंचास्तिकाय की आचार्य अमृतचन्द्र कृत समयव्याख्या नामक टीका का है; पण्डित टोडरमलजी ने तो मात्र यहाँ उद्धृत किया है।

यह तो हम पहले स्पष्ट कर आये हैं कि टोडरमलजी ने अधिकांश उद्धरण अपनी स्मृति के आधार पर ही दिये हैं; क्योंकि उस समय प्रत्येक ग्रन्थ की उपलब्धि सदा सर्वत्र सहज नहीं थी।

पंचास्तिकाय संबंधी उक्त उद्धरण में भी यही हुआ है। पण्डितजी ने **क्वचित्** शब्द का प्रयोग किया है, जबकि पंचास्तिकाय की समयव्याख्या टीका में **कदाचित्** शब्द प्राप्त होता है।

अनेक शब्दकोशों को देखने पर पता चलता है कि दोनों शब्दों का लगभग एक ही अर्थ है। शब्दकोशों में जो अर्थ प्राप्त हुए हैं; वे इसप्रकार हैं – कभी, कभी-कभी, बहुत कम आदि। शब्दकोशों में प्राप्त सभी अर्थों से एक ही बात प्रतिफलित होती है कि ज्ञानीजनों को भक्ति का भाव सदा नहीं, कभी-कभी ही आता है। जब भी आता है, अशुभभाव से बचने के लिए ही आता है, पुण्यकर्म बांधने के लिए नहीं।

निश्चयभक्ति तो ज्ञानी को सदा विद्यमान ही रहती है; परन्तु शुभभाव और शुभक्रियारूप व्यवहार भक्ति कभी-कभी होती है।

इससे तो ऐसा लगता है कि ज्ञानी की अपेक्षा अज्ञानी को भक्ति विशेष होती होगी; क्योंकि अज्ञानी भक्ति को मुक्ति का कारण मानता है।

इसप्रकार का प्रश्न उपस्थित होने पर टोडरमलजी कहते हैं –

''यथार्थता की अपेक्षा तो ज्ञानी के सच्ची भक्ति है, अज्ञानी के नहीं है और रागभाव की अपेक्षा अज्ञानी के श्रद्धान में भी उसे मुक्ति का कारण जानने से अति अनुराग है, ज्ञानी के श्रद्धान में शुभबन्ध का कारण जानने से वैसा अनुराग नहीं है।

बाह्य में कदाचित् (कभी) ज्ञानी को अनुराग बहुत होता है, कभी अज्ञानी को होता है – ऐसा जानना।[१]''

यद्यपि सच्ची भक्ति तो ज्ञानी के ही होती है; क्योंकि वह भगवान की वीतरागता और सर्वज्ञता को भलीभाँति पहिचानता है; तथापि अज्ञानी की भक्ति में जैसा अति-अनुराग देखा जा सकता है, वैसा ज्ञानी की भक्ति में नहीं; क्योंकि अज्ञानी तो उसे मुक्ति का कारण मानता है और ज्ञानी उसे बंध का कारण जानता है।

उक्त कथन तो दोनों की श्रद्धा की अपेक्षा है; अत: **जितना जोर अज्ञानी की भक्ति में होगा; उतना जोर ज्ञानी की भक्ति में संभव नहीं है।** बाह्य में कभी ज्ञानी को भी अधिक अनुराग हो सकता है और कभी अज्ञानी को भी हो सकता है।

इसप्रकार व्यवहाराभासी की देवभक्ति के संबंध में चर्चा करने के उपरान्त अब उसी की गुरुभक्ति के बारे में बात करते हैं –

''कितने ही जीव आज्ञानुसारी हैं। वे तो कहते हैं – यह जैन साधु हैं, हमारे गुरु हैं, इसलिए इनकी भक्ति करनी – ऐसा विचारकर उनकी भक्ति करते हैं। और कितने ही जीव परीक्षा भी करते हैं।

वहाँ यह मुनि दया पालते हैं, शील पालते हैं, धनादि नहीं रखते, उपवासादि तप करते हैं, क्षुधादि परीषह सहते हैं, किसी से क्रोधादि नहीं करते हैं, उपदेश देकर औरों को धर्म में लगाते हैं – इत्यादि गुणों का विचार कर उनमें भक्तिभाव करते हैं। परन्तु ऐसे गुण तो परमहंसादिक अन्यमतियों में तथा जैनी मिथ्यादृष्टियों में भी पाये जाते हैं, इसलिए इनमें अतिव्याप्तिपना है। इनके द्वारा सच्ची परीक्षा नहीं होती।

तथा जिन गुणों का विचार करते हैं, उनमें कितने ही जीवाश्रित हैं, कितने ही पुद्गलाश्रित हैं; उनके विशेष न जानते हुए असमानजातीय मुनिपर्याय में एकत्वबुद्धि से मिथ्यादृष्टि ही रहते हैं।

तथा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतारूप मोक्षमार्ग; वह ही मुनियों का सच्चा लक्षण है, उसे नहीं पहिचानते; क्योंकि यह पहिचान हो जाये तो मिथ्यादृष्टि रहते नहीं।

इसप्रकार यदि मुनियों का सच्चा स्वरूप ही नहीं जानेंगे तो सच्ची भक्ति कैसे होगी ? पुण्यबंध के कारणभूत शुभक्रियारूप गुणों को पहिचानकर उनकी सेवा से अपना भला होना जानकर उनमें अनुरागी होकर भक्ति करते हैं।[२]''

अधिकांश लोग तो यह मानकर ही गुरुओं की पूजा-भक्ति करते हैं कि ये जैन साधु हैं, हमारे गुरु हैं; इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२३ २. वही, पृष्ठ २२३

2 जनवरी 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

इनकी पूजा-भक्ति करें।

यदि कुछ लोग परीक्षा भी करते हैं तो उन बातों की परीक्षा करते हैं; जो अन्यमतवाले साधुओं में भी प्राप्त होती है। दया का पालन करना, धनादि का नहीं रखना, उपवासादि करना - ये बातें तो ऐसी ही हैं कि लगभग सभी धर्मवाले साधुओं के प्राप्त हो जाती हैं। इनके आधार पर दिगम्बर जैन साधुता के स्वरूप का निर्णय कैसे हो सकता ?

जिनगुणों के आधार पर परीक्षा की जाती है, उनमें कुछ गुण तो आत्माश्रित होते हैं और कुछ देहाश्रित। देहाश्रित गुणों के आधार पर की गई परीक्षा सही निर्णय पर पहुँचाने में समर्थ नहीं है।

साधुओं का सच्चा लक्षण तो उनके सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकतारूप मोक्षमार्ग होना है। ये असली धार्मिक क्रियायें हैं। इन्हें पहिचाने बिना पुण्यबंध के कारणरूप शुभभाव और शुभक्रियाओं के आधार पर उन्हें महान मानकर उनकी पूजा-भक्ति करने को ठीक कैसे कहा जा सकता है ?

इसप्रकार व्यवहाराभासी जीव गुरुभक्ति किसप्रकार करते हैं और वह उचित क्यों नहीं है - यह स्पष्ट हुआ। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

1. जयपुर निवासी श्री राजमलजी जैन (लवाणवालों) का दिनाँक 15 दिसम्बर को 83 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप स्वभाव से मृदुभाषी, सिद्धान्तवादी, मिलनसार तथा ग्राम विकास एवं शिक्षा के प्रति सदैव जागरुक थे। टोडरमल स्मारक में लगनेवाले प्रत्येक शिविर में आप उपस्थित रहते थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 5100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई है; एतदर्थ धन्यवाद !

2. फालेगांव - देशमुख (महाराष्ट्र) निवासी श्री अण्णासा माणिकसा गोरे का दिनाँक 25 नवम्बर को 93 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे एवं सोनगढ व जयपुर से जुड़े हुये थे। आपको कई बार स्वामीजी से मिलकर स्वाध्याय की प्रेरणा मिली थी। 1972 में महाराष्ट्र प्रांत का प्रथम शिक्षण शिविर आपके सानिध्य में फालेगांव में संपन्न हुआ था।

ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक प्रा. कीर्तिंजय गोरे के पिता एवं पण्डित अजय मृत्युंजय गोरे के दादाजी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

प्रदूषणमुक्त नववर्ष का संकल्प

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, राजस्थान प्रदेश एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित सर्वोदय अहिंसा अभियान के अन्तर्गत एक पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता रखी गयी, जिसके अन्तर्गत बालकों ने नववर्ष को प्रदूषणमुक्त एवं अहिंसात्मक तरीके से मनाने हेतु संकल्प व्यक्त किया।

अहिंसा अभियान के संयोजक पण्डित संजयजी शास्त्री ने बताया कि हमारा उद्देश्य त्यौहारों को सुरक्षित एवं अहिंसक रूप से मनाने की प्रेरणा देना है।

प्रतियोगिता में अदिति (सेंट पीटर स्कूल) एवं हर्षिता (सुबोध स्कूल) ने प्रथम, श्रुति जैन (सुबोध स्कूल) ने द्वितीय तथा सुमतिनाथ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संयोजन कु.परिणति पाटील एवं श्रीमती प्रीति जैन ने किया। **- संजय शास्त्री**

नि:शुल्क पोस्टर प्राप्त करें !

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के सहयोग से मकर संक्रान्ति के अवसर पर मांझे से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से सर्वोदय अहिंसा अभियान चलाया जा रहा है।

इसके अन्तर्गत विशेष रूप से चाइनीज मांझे से होने वाले नुकसान को बताने वाले सचित्र पोस्टर का प्रकाशन किया गया है। यह पोस्टर फैडरेशन की शाखाओं को नि:शुल्क भेजा जा रहा है। पोस्टर प्राप्त करने के इच्छुक **संपर्क करें** - संजय शास्त्री, 9509232733

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल
के व्याख्यान देखिये ह्न
प्रतिदिन प्रातः
6.40 से 7.00 **बजे तक**